रागों में साम्य - भेद

नमस्ते पाठकवर !

इस बार के मंथन के लिए रागों की तुलना का प्रश्न विवरण के साथ बताने को कहा गया है| राग डॉ. अन्जलीजी द्वारा सुझाये गए हैं| वे हैं -- भूपाली-देसकार, भैरव-कालिंगड़ा और पूरिया-मारवा-सोहनी |

सर्व प्रथम हम भूपाली एवं देसकार के विषय में सोचेंगे| यह तो सभी पाठक जानते हैं कि भूपाली के वादी-सम्वादी ग-ध हैं और देसकार के ध-ग| भूपाली रात्रि गेय है और देसकार प्रात:काल में गाया जाता है| भूपाली में गंधार पर ठहराव होता है,अन्य न्यास के स्वरों में षड्ज एवं रिषभ हैं|यद्यपि धैवत सम्वादी है ,किन्तु उसपर अधिक ठहराव होने पर राग का स्वरूप बिगड सकता है| देसकार में धैवत को स्पष्ट रूप से दिखाना और पंचम पर ठहरना इन विशेषताओं के कारण राग का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है|

रागमें चलन को देखना अति आवश्यक होता है| यहाँ यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि भूपाली कल्याण अंग का राग है तथा देसकार बिलावल अंग का|अत:चलन पर उन सम्बन्धित अंगों का असर तो रहेगा ही | बिलावल स्वयं भी धैवत वादी और गंधार संवादी होने से उत्तरांग की ओर झुकाव रखता है,उसी प्रकार देसकार के चलन में उत्तरांग की प्रधानता है| कल्याण में ग-नी वादी -सम्वादी होने से वह पूर्वांग प्रधान राग है| भूपाली में निषाद वर्जित होने से धैवत सम्वादी है| अत: पूर्वांग में गंधार की एवं उत्तरांग में धैवत की न्यास-स्वर के रूप में स्थापना अपने आप हो जाती है| भूपाली में अवरोही चलन होता है, गंधार वादी होने से पूर्वांग की प्रधानता है| ऐसे रागों को अधोमुख अर्थात नीचे की ओर मुख रखने वाले राग कहते हैं| स्पष्ट है कि देसकार ऊर्ध्व मुख अर्थात आरोह में स्पष्ट होने वाला राग है| उसका वादी उत्तरांग में होने से वह उत्तरांग वादी राग है| पूर्वांगवादी रागों का विस्तार सप्तक के प्रथम भाग -- पूर्वांग में होता है , इसीसे आलापों की प्रधानता रहती है; जबकि देसकार राग उत्तरांग वादी होने से उसमें बोल बाँट और तानें अधिक गायी जाती हैं| लयकारी अधिक होती है| इस संदर्भ में एक प्रश्न पूछा गया था कि सवेरे अहीर भैरव और नट भैरव अधिक मात्रा में सुने जाते हैं तथा देसकार सरल राग होते हुए भी कम गाया जाता है| अब उपरोक्त वर्णन पढ़ने के पश्चात आप समझ गए होंगे कि आलापचारी की क्षमता देसकार में कम होने से कलाकार पहले कोई विस्तार प्रधान अर्थात पूर्वांग वादी राग प्रस्तुत करने के उपरान्त [जैसे कि अहीर भैरव या नट भैरव आदि] देसकार जैसे कम विस्तार की क्षमता वाले राग पेश करते हैं| इस प्रकार यद्यपि दोनों राग औडव जाति के हैं, एक का चलन मन्द्र और मध्य सप्तक में अधिक होने से वह शुरू में पेश किया जाता है और दूसरे का चलन मध्य और तार सप्तक में अधिक होने से उसे विस्तार के राग के पश्चात प्रस्तुत किया जाता है|

अब हम राग भैरव तथा कालिंगड़ा में साम्य और भेद के विषय में विचार करेंगे | दोनों राग भैरव थाट से उत्पन्न होते हैं| दोनों में रिषभ एवं धैवत कोमल हैं| भैरव के रिषभ एवं धैवत आंदोलित होते हैं, जबकि कालिंगड़ा के रे - ध आंदोलित नहीं होते| इसीसे भैरव में जो गम्भीर भाव होते हैं उनका कालिंगड़ा में अभाव रहता है| भैरव बहुत प्राचीन राग है| छह राग और छत्तीस रागिनियों की व्यवस्था के समय में ही यह राग विद्यमान था| ध्रुपद गायन में भैरव राग का बहुत प्रयोग हुआ करता था| आज भी ख्याल गायन में भैरव राग का स्थान महत्वपूर्ण होता है| यह भैरव थाट का आश्रय राग है| कोमल धैवत वादी और कोमल रिषभ सम्वादी है| दिन के प्रथम प्रहर में इसे गाते हैं और यह प्रात:कालीन सन्धिप्रकाश राग माना जाता है| कालिंगडा में अधिकतर ख्याल नहीं गाये जाते हैं| रात्रि के अंतिम प्रहर में इसे गाते हैं| प्राय:परज के बाद कालिंगडा को गाया जाता है| भक्तिरस की अधिकता वाला माना जाना से इस राग में भजन गाये जाते हैं| अत: यद्यपि यह भैरव थाट का राग है, इसमें पर्याप्त गम्भीर भाव नहीं है| एक और राग इसका निकटवर्ती है--जोगिया अथवा जोगी| किन्तु भैरव और कालिंगड़ा सम्पूर्ण राग हैं, भैरव सम्पूर्ण सम्पूर्ण और कालिंगड़ा वक्र सम्पूर्ण| किन्तु जोगिया की ओडव सम्पूर्ण जाति है| आरोह में ग -नी वर्जित हैं, साथही उसमें कोमल निषाद विवादी के रूप में आता है| इसीसे कालिंगड़ा से उसका रूप काफी अलग है| एक और सूक्ष्म भेद है कि जोगिया विप्रलम्भ शृंगार के लिए प्रयुक्त होता है, जबकि कालिंगड़ा में भक्ति रस की प्रधानता रहती है| इस प्रकार से भैरव राग इन दोनों रागों से काफी अलग है| ये दोनों राग उपशास्त्रीय संगीत तथा भजन आदि में अधिक प्रयुक्त होते हैं|

अब हम पूरिया ,मारवा एवं सोहनी रागों में समानता और भेद की चर्चा करेंगे| इन तीनों रागों में रिषभ कोमल, मध्यम तीव्र तथा धैवत शुद्ध लगता है और तीनों रागों में पंचम स्वर वर्जित है| तीनों राग मारवा थाट से उत्पन्न हैं| वैसे पूरिया राग को पं. ना .मो. खरे जी ने मारवा रागांग में माना है, तथापि पूरिया का अपना प्रबल रागांग होने से उसे रागांग राग मानना उचित है| यहाँ इनकी समानता समाप्त हो जाती है| पूरिया एक ऐसा राग है जिसका धैवत कोमल न होते हुए भी कुछ नरम है| मारवा का धैवत खड़ा या कुछ कड़ा है| सोहनी का धैवत सामान्य है| मारवा सीधा आरोह और सीधा अवरोह लेते हुए गाया जाता है, सोहनी में आरोह में रिषभ दुर्बल है| अत:राग कि जाति औडव षाडव या षाडव मानी जाती है| मारवा में पंचम न होने से निषाद से आलापों और तानों की शुरुआत करने की प्रथा है, जिससे इस राग को सुनने से कुछ बेचैनी सी प्रतीत होती है| गाने में भी शुरू शुरू में सीखते समय बेसुरापन आने लगता है| इसका कारण यह है कि सामान्य रूप से पंचम एवं षड्ज डॉ स्तम्भ होते हैं जो सप्तक को सम्भाले रहते हैं| यहाँ ऐसा होता है कि पंचम वर्जित और षड्ज का महत्त्व कम होने से निषाद से आलाप, तानों का आरम्भ; इससे स्वर सागर में डूबने जैसा अहसास होता है| बाद में अभ्यास, रियाज से सुर सध जाता है| अब पूरिया में भी स्वर तो येही हैं, किन्तु वक्र रूप से प्रयुक्त होते हैं, जैसे मन्द्र नी, म ग,निरे सा, ग म ध नी म ग,म ध नी रे नी म ग,म ध ग,मग, मनी ,म ग रे सा| रे [तार सप्तक] नी ध म ग ,नी धम ग ,म निध सा [तार] नी म ग [दोनों तार], म नी रे सा,सा नी रे नी म ग --- अर्थात न सीधे आरोह करते हैं, ना ही सीधे अवरोह किया

जाता है| इस प्रकार से यह राग पूरा वक्र है; किन्तु प्रासादिक या मिलन शृंगार की अनुभूति देता है| अब सोहनी को देखें| यहउत्तरांग प्रधान राग है| इसमें बड़े ख्याल यदि गाते भी हैं तो अधिकतर मध्य लय में ही गाते हैं, तथापि झपताल, अदाचौतल, त्रिताल और रूपक इन्ही तालों में ख्याल गाये जाते हैं| चतरंग,त्रिवट और तराने प्रचुर मात्र में गाते हैं| वादी-संवादी ध-ग होते हुए भी तार षड्ज का स्थान महत्त्वपूर्ण रहता है और वह यदा तदा चमकता रहता है| राग स्वरूप सरल है राग बहुत लोकप्रिय है| इस प्रकार से मारवा गम्भीर और कुछ हदतक उदासी लिए हुए ,पूरिया वक्र फिर भी प्रासादिकऔर सोहनी प्रसन्न भाव को लिए हुए --- ऐसा है यह रागों का तुलनात्मक चित्र|

फिर भेंट होगी कुछ और तथ्यों के साथ| नमस्कार |

Similarities and Differences between Raagas

Namaste Readers,

For this article of Manthan, the question of comparison of Raagas is to be explained in detail. Raagas are suggested by Dr. Anjaliji – Bhoopali-Deskaar, Bhairav-Kalingada and Puriya-Marava-Sohni.

In the beginning, we will think of Raag Bhoopali and Deskaar. All the readers know that Vaadi-Sanvaadi of Bhoopali are G-D and those of Deskaar are D-G. Bhoopali is sung at night and Deskaar is sung at dawn. In raag Bhoopali, pause(nyaas) is on Gandhaar. Other Nyaas swars are Shadaj and Rishabh. Dhaivat is Sanvaadi, but if stayed longer on Dhaivat, the form of raag is changed or disturbed. Specialty of Raag Deskaar is to show Dhaivat in clear form and stay longer on Pancham which describes the clear form of the raag.

It is very important to sing according to the chalan of the raag. Here, one more important thing to note is, raag Bhoopali is of Kalyaan ang and raag Deskaar is of Bilawal ang. Therefore, the challans will surely have the effect of those corresponding angs. Raag Bilaawal itself has Vaadi Dhaivat and Sanvaadi Gandhaar, so tends towards Uttarang (second half of the saptak). Similarly, in the chalan of Deskaar, there is a primacy of Uttarang. In raag Kalyaan, G and Ni are vaadi and sanvaadi, so Poorvang(first half of the saptak) is prime. In raag Bhoopali, Nishaad is varjit, so sanvaadi is Dhaivat. Therefore, Gandhaar in Poorvang and Dhaivat in Uttarang are automatically established as Nyaas swars. In raag Bhoopali, chalan is avarohi, being Gandhar as Vaadi, Poorvang is prime. Such raagas are called 'Adhomukh' which means their face is downwards. It is clear that Deskaar is Urdhvamukh which means more described (explanatory) in aaroh. Its vaadi swar being in uttarang, it is uttarangvaadi raag. The expansion of poorvangvaadi raag is in first part of saptak – poorvang, therefore, there is primacy of alaaps. However, raag Deskaar being uttarangpradhan, bol bant and taans are sung more into it. Laykaari is more. In this reference, a question was asked that Ahir Bhairav and Nat Bhairav are listened (or performed) more in the morning but Deskaar is sung less though it is saral (not vakra) raag. Now after reading the above description, you must have realized that as there is a less capacity of (or scope for) singing alaaps in Deskaar, a performer (an artist) performs any expandable raag (vistarpradhan raag) in other words, poorvangvadi raag in the beginning (e.g. Ahir Bhairav, Nat Bhairav etc.) followed by raagas of less expansion like Deskaar. In this way, though both the raagas are of Jaati Audav, chalan of one is more in mandra and Madhya saptak and that of other is in Madhya and taar saptak, so it is performed after the vistarpradhan (expandable) raag.

Now we will think of similarity and differences between raag Bhairav and raag Kaalingada. Both raagas are produced from Thaat Bhairav. Both raagas are having komal Rishabh and komal Dhaivat. Rishabh and Dhaivat of Bhairav are with andolan whereas Re and Dha of Kalingada are without. Because of this there is serious (gambhir) emotion (feeling) in Bhairav which lacks in Kalingada. Bhairav is very ancient raag. It was present since the time of 6 raags and 36 raginis' system. In Dhrupad singing, Bhairav raag was most frequently used. Today also in Khyaal singing, raag Bhairav is on important place. This is an Ashray raag of Thaat Bhairav. Vaadi is komal Dhaivat and sanvaadi is komal Rishabh. It is sung in the first part of day and is considered as 'Pratakalin Sandhiprakash' raag. Mostly khyaals are not sung in raag Kalingada. This raag is sung in the last part of night. Normally, Kalingada is sung after raag Paraj. This raag being considered having more of a 'Bhaktiras' (devotional feeling), bhajans are sung in this raag. Therefore, this raag is not having serious (gambhir) feeling though it belongs to thaat Bhairav. One more raag which is close to this raag is raag Jogiya or Jogi. While Bhairav and Kalingada are Sampoorna ragas, Bhairav being Sampoorna Sampoorna and Kalingada

Vakra Sampoorna, jogiya is Odav-sampoorna. Ga-Ni are varjya in aaroh, also komal Nishaad appears in the form of vivaadi. This is the reason why this raag is so different from Kaalingada. One more minor difference is raag Jogiya is used mostly for expressing feelings like separation (parting or 'viyog') and raag Kalingada has primacy for devotional feeling. This is the reason why raag Bhairav is totally different from these 2 raagas. These 2 raagas are mostly used for semi-classical music and bhajan etc.

Now, we will discuss similarities and differences between raag Puriya, raag Marava and raag Sohani. In these 3 raagas, Rishabh is komal, Madhyam is tivra and Dhaivat is shuddha. In all these 3 raagas, Pancham is varjit (absent). All 3 raagas belong to Marava thaat. According to Pt. N.M. Khare, Pooriya raag is considered under Marava ragang, but Pooriya has its own strong (prabal) raagaang, therefore, it is appropriate to consider it as raagaang raag. Here ends their similarity. Pooriya is one of the raags which does not have Dhaivat komal, but it is little softer. Dhaivat of Marava is more rigid. Dhaivat of Sohani is common. Marava is sung with straight aaroh and straight avaroh, In raag Sohani, Rishabh is weak in aaroh. Therefore, jaati of the raag is considered Audav-Shaadav or Shaadav. In Maarava, because of absence of Pancham, there is a tradition of starting alaaps and taans with Nishaad, which causes uncomfortable feeling while listening to this raag. Also while singing this raag, in the beginning while learning, disharmony(besuraapan) starts appearing. The reason behind this is, usually Pancham and Shadaj are the 2 pillars which support the saptak. Here, Pancham is absent (varjit) and Shadaj is less important, so alaaps and taans starting from Nishaad, gives a feeling of drowning in the ocean of swars. Later by practice and riyaaz, swar is served (improved). Now in Pooriya also there are same swars, but are used in curved form, e.g. mandra Ni, Ma Ga, Ni Re Sa, G M Dha Ni M G, M Dha Ni Re Ni M G, M Dha G, MG, MNi, M G R S. R'(taar Re) Ni Dha Ma Ga, Ni DhaM G, M NiDha S' (taar) N M G(both taar), M Ni Re Sa, Sa Ni Re Ni M G --- like this no straight aaroh and no straight avaroh. In such a way, this raag is completely curved (vakra), but gives a suave(pleasing) feeling. Now, look at raag Sohani. This is uttarangpradhan raag. In this raag, if we sing badaa khyaal, then it is sung in Madhya laya, however, khyaals in this raag are sung only in the taals like Zaptaal, Aadaa-chautaal, Tritaal and Roopak. Chatarang, Trivat and Taraanas are sung abundantly. Inspite of being Dha and Ga as Vaadi and Sanvaadi respectively, taar Shadaj has very much importance and it shines at all times. Form of the raag is simple. Raag is very popular. Thus Maarava serious and with sad feeling at certain limit, Puriya curved still pleasant and Sohani carrying feeling of happiness, this is the comparative picture of these ragas.

Will see you again in the next article with some more facts. Thank you !!!